शिक्षा की व्यवस्था
(ORGANIZATION OF EDUCATION)

सामान्य परिचय—भारत में मुस्लिम शासकों ने केन्द्रीय या प्रान्तीय स्तर पर शिक्षा के किसी विभाग की स्थापना नहीं की, पर उन्होंने साधारणतः शिक्षा में रुचि अवश्य ली। फलस्वरूप, लगभग सम्पूर्ण मुस्लिम काल में प्राथमिक और उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी। उस काल में शिक्षा के केवल यही दो स्तर थे। इन दोनों स्तरों पर शिक्षा प्रदान करने के लिए मुस्लिम शासकों और विद्या-प्रेमी, धनी व्यक्तियों द्वारा मकतबों और मदरसों की स्थापना की गई थी। इन संस्थाओं में शिक्षा का आयोजन मुख्यतः मुसलमानों के लिए ही था। **डॉ० एफ० ई० केई के शब्दों में—"कुछ अपवादों के अलावा मुस्लिम-शिक्षा जनता के उन अल्पसंख्यकों के लिए थी, जो मुस्लिम धर्म को अंगीकार कर लेते थे।"**

"Mohammedan education, with a few exceptions, was open to that minority of the population, which embraced the Mohammedan faith."

—**Dr. F. E. Keay** : *op. cit.*, P. 182.

केई के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि मुस्लिम-शिक्षा संस्थाओं में हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित नहीं था। परन्तु इन संस्थाओं का धार्मिक कट्टरता का वातावरण, हिन्दू छात्रों के लिए इतना विषाक्त था कि वे इनमें प्रदान की जाने वाली शिक्षा से पूर्णरूपेण लाभान्वित नहीं हो पाते थे। इस सामान्य परिचय के पश्चात् हम उपरिवर्णित शिक्षा के दोनों स्तरों का परिचय उपस्थित कर रहे हैं।

1. प्राथमिक शिक्षा
(PRIMARY EDUCATION)

1. शिक्षा-संस्थाएँ—प्राथमिक शिक्षा के मुख्य केन्द्र—मकतब थे। उनके अतिरिक्त, खानकाहों और दरगाहों (Khanaqahas & Dargahas) में भी प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। इन शिक्षा-संस्थाओं में केवल मुसलमान बच्चे ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। कुछ व्यक्तिगत शिक्षक अपने घरों पर प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने का कार्य करते थे।

2. प्रवेश—जिस प्रकार वैदिक युग में "उपनयन संस्कार" के पश्चात् और बौद्ध-युग में "पब्बज्जा संस्कार" के उपरान्त बालक की शिक्षा आरम्भ होती थी, उसी प्रकार मुस्लिम युग

Scanned with CamScanner

में "बिस्मिल्लाह-खानी" (Bismillah-Khani) की रस्म के बाद बालक अपनी शिक्षा आरम्भ करता है। यह रस्म उस समय होती थी, जब बालक 4 वर्ष, 4 माह और 4 दिन का होता था। इस रस्म के समय बालक के लगभग सभी सम्बन्धी उपस्थित रहते थे और वह नए वस्त्र धारण करके मौलवी साहब के समक्ष उपस्थित होता था। मौलवी साहब कुरान शरीफ की आयतें पढ़ते थे और बालक से उनको दोहरवाते थे। यदि बालक उनको दोहराने में असमर्थ होता था, तो उसके द्वारा केवल "बिस्मिल्लाह" कहा जाना ही पर्याप्त समझा जाता था।

इस प्रकार, बालक की प्राथमिक शिक्षा का श्रीगणेश होता था। डॉ० एफ० ई० केई के अनुसार—**"सभी मुसलमान बालकों से प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने की आशा की जाती थी, ताकि वे अपने प्रतिदिन के धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित कुरान की आयतों को स्मरण कर लें। किन्तु, इस बात को निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि सभी बालक इस शिक्षा को प्राप्त करते थे।"**

3. पाठ्यक्रम—मकतबों का पाठ्यक्रम विभिन्न स्थानों में विभिन्न था। साधारणतः बालकों को पढ़ने, लिखने और साधारण अंकगणित की शिक्षा दी जाती थी। उनको सबसे पहले वर्णमाला के अक्षरों का ज्ञान कराया जाता था और उसके पश्चात् कुरान की कुछ आयतें कंठस्थ कराई जाती थीं। बालक के लिए उनका अर्थ समझना आवश्यक नहीं था, पर उनका शुद्ध उच्चारण करना अनिवार्य था। उसके पश्चात् बालक को लिखना सिखाया जाता था। जब बालक को पढ़ने और लिखने का पर्याप्त ज्ञान हो जाता था, तब उसे व्याकरण और फारसी भाषा की शिक्षा दी जाती थी। व्यावहारिक शिक्षा के अन्तर्गत बातचीत करने के ढंग, सुन्दर लेख, पत्र-लेखन और अर्जीनवीसी का प्रमुख स्थान था।

बालक का नैतिक और चारित्रिक विकास करने के लिए उसे शेख सादी की प्रसिद्ध पुस्तकें, "बोस्ताँ" एवं "गुलिस्ताँ" पढ़ाई जाती थीं और पैगम्बरों की कथाएँ एवं मुस्लिम फकीरों की कहानियाँ सुनाई जाती थीं। इनके अतिरिक्त उसको "लैला-मजनू", "यूसुफ-जुलेखा", "सिकन्दरनामा" आदि काव्यों का ज्ञान प्रदान किया जाता था।

यहाँ यह लिख देना अनुपयुक्त न होगा कि शाहजादों और सम्पन्न परिवारों के बालकों को उनके निवास-स्थानों पर व्यक्तिगत अध्यापकों द्वारा शिक्षा दी जाती थी और उनका पाठ्यक्रम उनकी आवश्यकताओं के अनुसार विशेष प्रकार का होता था।

4. शिक्षण-विधि—मकतबों में शिक्षण-विधि मौखिक और प्रत्यक्ष थी। बालक को शुद्ध उच्चारण का ज्ञान हो जाने के बाद कलमा और कुरान की कुछ आयतें कंठस्थ करनी पड़ती थीं। कक्षा के सब बालक उच्च स्वर में एक साथ बोलकर पहाड़े रटते थे। मौलवी साहब नया पाठ तभी पढ़ाते थे, जब बालकों को पिछला पाठ कण्ठस्थ हो जाता था। इस प्रकार, कण्ठस्थ करना, शिक्षण-विधि का मुख्य तत्व था।

बालक द्वारा लिखने के लिए लकड़ी की तख्ती का प्रयोग किया जाता था। वह उस पर मोटे सरकण्डे की कलम से लिखने का अभ्यास करता था। जब उसे लिखने का कुछ अभ्यास हो जाता था, तब वह पतले कलम से कागज पर लिखता था।

2. उच्च शिक्षा
(HIGHER EDUCATION)

1. शिक्षा-संस्थाएँ—उच्च शिक्षा की संस्थाएँ—मदरसे थे। बालक अपनी प्राथमिक शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए मदरसे में प्रवेश करता था। उसे

Scanned with CamScanner

प्रवेश के समय कोई संस्कार सम्पन्न नहीं करना पड़ता था। उच्च शिक्षा के केन्द्र सम्पूर्ण देश में बिखरे हुऐ थे। इनमें आगरा, दिल्ली, लाहौर, मुल्तान, अजमेर, लखनऊ, स्यालकोट और मुर्शिदाबाद के मदरसों ने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित की थी। इसीलिए, बुखारा, अफगानिस्तान और अन्य मुस्लिम देशों के छात्र उनमें ज्ञान का अर्जन करने के लिए आते थे।

2. पाठ्यक्रम—उच्च शिक्षा की अवधि 10 से 12 वर्ष की थी। उसका पाठ्यक्रम बहुत विस्तृत था और निम्नलिखित दो भागों में विभाजित था—

(i) धार्मिक शिक्षा—धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत छात्र को कुरान की आयतें कण्ठस्थ करनी पड़ती थीं और उनका सूक्ष्म एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उसे सूफी सिद्धान्तों एवं इस्लामी इतिहास, कानूनों, सिद्धान्तों और परम्पराओं का अध्ययन करना पड़ता था।

(ii) लौकिक शिक्षा—लौकिक शिक्षा के अन्तर्गत छात्र को अग्रांकित विषयों की शिक्षा दी जाती थी—अरबी और फारसी भाषाओं का साहित्य एवं व्याकरण, कृषि, गणित, भूगोल, कानून, ज्योतिष, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, यूनानी चिकित्सा आदि।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त सब विषयों की शिक्षा सब मदरसों में नहीं दी जाती थी। इसके विपरीत, प्रत्येक मदरसे में साधारणतः दो विषयों की शिक्षा दी जाती थी; जैसे—दिल्ली के मदरसे में कविता और संगीत की, स्यालकोट के मदरसे में गणित और ज्योतिष की एवं रामपुर के मदरसे में ज्योतिष और अर्थशास्त्र की।

3. शिक्षण-विधि—मदरसों में शिक्षण-विधि मौखिक थी और छात्रों को शिक्षा देने के लिए अध्यापक, भाषण-विधि का प्रयोग करते थे। कक्षा-नायकीय पद्धति (Monitorial System) का पर्याप्त प्रचलन था। धर्म, दर्शन, तर्कशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के शिक्षण में तर्क-विधि का मुख्य स्थान था। संगीत, हस्तकला, चित्रकला और चिकित्साशास्त्र आदि विषयों की शिक्षा में व्यावहारिक कार्य की समुचित व्यवस्था थी। छात्रों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित किया जाता था और उनकी कठिनाइयों का अध्यापकों के द्वारा निराकरण किया जाता था।

इस प्रकार, यद्यपि मदरसों में शिक्षण-विधि मुख्यतः मौखिक थी, तथापि पढ़ने और लिखने को उससे श्रेष्ठतर स्थान प्रदान किया जाता था। **गन्नार मिरडल** के शब्दों में—**"उच्च-शिक्षा की संस्थाओं में पढ़ने और लिखने को मौखिक शिक्षण-विधियों से श्रेष्ठतर स्थान प्रदान किया जाता था।"**

4. शिक्षा का माध्यम—मुस्लिम शासन-काल में राज्य की भाषा, फारसी थी। इस भाषा का ज्ञान प्राप्त करके ही मनुष्यों को राजपद प्राप्त हो सकते थे। इस कार्य में सहायता देने के लिए फारसी को शिक्षा के माध्यम के पद पर प्रतिष्ठित किया गया था। **गन्नार मिरडल** के अनुसार—**"उच्च स्तर पर शिक्षा का माध्यम फारसी भाषा थी।"**

5. परीक्षाएँ—आधुनिक युग के समान मुस्लिम युग में छात्रों की परीक्षा की कोई निश्चित प्रणाली नहीं थी। शिक्षक प्रत्येक छात्र के ज्ञान का स्वयं मूल्यांकन करके, उसे उच्च कक्षा में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दे देता था।

6. उपाधियाँ—सामान्य रूप से, शिक्षा समाप्त करने वाले छात्रों को प्रमाण-पत्र या उपाधियाँ नहीं दी जाती थीं। किन्तु जो छात्र अपने अध्ययन के विषय में असाधारण योग्यता का प्रमाण देते थे, उनको उपाधियों से विभूषित किया जाता था। उदाहरणार्थ—साहित्य के

Scanned with CamScanner

छात्रों को "काबिल" की धर्मशास्त्र के छात्रों को "आलिम" की और तर्कशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र के छात्रों को "फाजिल" की उपाधि से अलंकृत किया जाता था। छात्रों को उपाधियाँ प्रदान करने के समय नियमित रूप से समारोह का आयोजन किया जाता था।